⇒ गायों की प्रमुख नस्ले →
(दुधारू नस्ले, द्वि प्रयोजनित नस्ले, भारवाही नस्लें)

→ दुधारू नस्ले -

(1) साहीवाल -

* मूल स्थान - मौन्टगोमरी (पाकिस्तान)
* अन्य नाम - लम्बी बार, मुल्तानी, लोला।
* यह लाल या भूरे रंग की होती है।
* यह ढीले सींगो के लिए जानी जाती है।
* स्वदेशी गाय की नस्लों मे सबसे ज्यादा दूध देने वाली नस्ल।
* औसत दूध उपज - 2500 लीटर प्रति ब्यांत।
* औसत वसा - 4.5%

(2) गिर -

* मूल स्थान - गिर जंगल, काठियावाड़, गुजरात।
* अन्य नाम - सुरती, भदावरी, गुजराती, सोरठी, काठियावाड़ी।
* यह चितकबरे रंग की होती है।
* राजस्थान में अजमेर एवं भीलवाड़ा क्षेत्र में पायी जाती है, जहाँ इसे रेण्डा या अजमेरी के नाम से जाना जाता है।
* देशी नस्लों में सर्वाधिक लम्बा दुग्धकाल (325 दिन) इसी नस्ल का होता है।
* पुष्कर मेले में इसी नस्ल की खरीद-फरोख्त ज्यादा होती है।
* औसत दूध उपज 1400-1600 लीटर प्रति ब्यांत।

(3) रेड सिन्धी और सिन्धी -

* मूल स्थान - कराची, सिन्ध प्रांत (पाकिस्तान)
* अन्य नाम - लाल कराची, सिन्धी और भाली।
* यह लाल भूरे रंग की नस्ल है।

(पेज नं. 8)

* यह गर्मी सहनशील नस्ल है।
* यह भारतीय गायों में सबसे प्राचीन नस्ल है।
* भारतीय गायो में सर्वाधिक वसा पायी जाती है।

→ द्वि प्रयोजनित नस्लें-

(1) थारपारकर —
* मूल स्थान - थारपारकर जिला (पाकिस्तान)
* अन्य नाम- सफेद सिन्धी, ग्रे सिन्धी और थारी।
* नस्ल का रंग सफेद या हल्का भूरा होता है।
* यह सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक नस्ल है।
* इस नस्ल में रंग परिवर्तन का गुण पाया जाता है।
* पश्चिम राजस्थान (जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर) एवं गुजरात के रण के कच्छ में भी पायी जाती है।

(2) हरियाणवी -
* मूल स्थान - रोहतक, हिसार (हरियाणा)
* इस नस्ल का रंग सफेद होता है, परन्तु शुद्ध सफेद ओंगोल नस्ल का होता है।
* यह नस्ल तेज चलने का गुण रखती है।
* भारतीय द्विप्रयोजनित नस्लों में श्रेष्ठ है।
* इस नस्ल की पूंछ के अन्तिम सिरे पर काले बालों का गुच्छा पाया जाता है।

(3) कांकरेज -
* मूल स्थान- गुजरात के बांसकाठा जिले में कांकरेज शहर।
* अन्य नाम- वागेड, वादिहार।
* इस नस्ल का रंग चमकीला भूरा या धूसर होता है। (पेज न. 9)

* भारतीय गायो में सबसे भारी नस्ल है।
* यह नस्ल सवाई चाल के लिए प्रसिद्ध है।
* यह नस्ल राजस्थान के पाली, जालोर एवं सिरोही जिलों में पाई जाती है।

(4) राठी –
* मूल स्थान - राठ क्षेत्र (अलवर)
* अन्य नाम - कामधेनु।
* इस नस्ल का रंग ईंट जैसा होता है।
* यह नस्ल उत्तरी पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, गंगानगर और जैसलमेर जिलों तथा थार रेगिस्तान के केन्द्र में पाली जाती है।

(5) मेवाती –
* मूल स्थान - कोसी (मथुरा)
* अन्य नाम - कोठी।

RAJASTHAN CLASSES EDU
COPYRIGHT
Helpline : 8107610333

(6) ओंगोल –
* मूल स्थान - गुंटूर (आन्ध्रप्रदेश)
* अन्य नाम - नेल्लोर।
* इस नस्ल का रंग शुद्ध सफेद होता है।

(7) देवनी –
* मूल स्थान - दक्षिण पश्चिम हैदराबाद।
* अधिकांश लक्षणों में गिर जैसी दिखती है।

(4) कृष्णा वेली -

* मूल स्थान - कर्नाटक में कृष्णा नदी के आस-पास का क्षेत्र।

→ भारवाही नस्ले -

(1) अमृत महल -

* मूल स्थान - कर्नाटक के हासन, चिकमगलूर एवं चित्रदुर्गा।
* इस नस्ल का रंग धूसर होता है।
* भारतीयो गायों में भारवाही नस्लो में सर्वश्रेष्ठ नस्ल के रूप में जानी जाती है।

(2) नागौरी -

* मूल स्थान - नागौर (राजस्थान)
* यह नस्ल सर्वाधिक तेज दौड़ने के लिए प्रसिद्ध है।
* इस नस्ल का रंग सफेद होता है।

RAJASTHAN CLASSES.EDU
COPYRIGHT
Helpline : 8107670333

(3) मालवी -

* मूल स्थान - मालवा क्षेत्र (MP)
* अन्य नाम - महादेवपुरी, मंथनी।
* यह नस्ल राजस्थान के झालावाड़, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़ जिलों में पायी जाती है।

(4) अन्य नस्लें -

* हल्लीकर - कर्नाटक।
* कंगायम - तमिलनाडू।
* खिल्लारी - महाराष्ट्र।
* सिरी - सिक्किम।
* बरगुर - तमिलनाडू।
* वेच्चुर - केरल।
* निमाड़ी - मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र में पाई जाती है।